Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारी चरित्र

जोरा भाई पटेल*

स्वतंत्योत्तर महिला साहित्यकारो में नारी चित्रण को लेकर मृदुला गार्ग का स्थान अद्वितीय हैं। उन्होने कुछ श्रेष्ठ उपन्यासों की सृष्टि करके नारी चित्रण के उपन्यास जगत में अपनी पहेचान बनाई हैं। उनके अब तक सात उपन्यास प्रकाशित हुए हैं 'उसके हिस्से की धूप','वशज', 'छितकोबरा', 'अनित्य' मैं और मैं ','कठगुलाब',एव 'मिल जुल मन'। मृदुला गर्ग के अधिकांश उपन्यास आज की नारी को उसके सहज मानवीय रूप मैं चित्रित करते हैं तथा नारी के चित्रित नारियो अपने सोच विचार, अपना चिंतन, अपनी प्रतिभा, अपनी संवेदनशीलता के कारण पाठको पर अमिट छाप छोड़ती हैं। इनकी नारियो लोक से हटकर नया मार्ग पर चलने का विश्वास उनमे हैं। 'उसके हिस्से की धूप', 'अनित्य', 'मैं' और मैं एव' कठगुलाब-मैं विवाहेतर संबंधो मे नारी का स्वरूप नया नारी का आधुनिक युग मैं बदला हुआ सशक्त रूप दिखाई देता हैं। 'उसके हिस्से की धूप' और 'छितकोबरा' में एसी सशक्त निर्मिक नारियों हैं जो प्रेम एउ सेक्स मैं पाप-पुण्य के संमोहन से ऊपर उठ चुकी है, जो विवाह को मानसिक संतुष्ठी का साधन मानती है। मृदुला जी का 'कठगुलाब' एक सशक्त नारी प्रधान उपन्यास हैं,जिसमे शोषण एउ अन्याय के खिलाफ संधर्षरत नारियो अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक दिखाई देती हैं। नारी चेतना में परिवर्तन लाने की बेचेनी मानो लेखिका के जेहन मे हैं। उसका फेमिनिष्ट इस अर्थ मैं हैं। की वह नारी को परंपरागत सोच से मुक्ति दिलाती हैं "मैं समाजती हु की फेमिसिजम का मतलब नारी मुक्ति नहीं,सोच की मुक्ति हैं।"

मनीषा:

'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास की नायिका मनीषा स्वतंत्र सोचवाली है। अपने आपको आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रही है। अपनी सार्थकता ढूंढ रही हैं। एक स्वतंत्र ऊर्जा और महत्वाकांशाओ को बरकरार रखते हुए स्वाभिमान से जीने की तड़प उसमे हैं।

मनीषा ने जीतें के साथ अरेंज मैरेज किया था। कम की व्यस्तता के कारण जीतने मनीषा को समय नहीं दे सकने के कारण तलाक लेकर मधुकर नागपल से विवाह करती है। वह इस वैवाहिक जीवन से भी ऊब जाती हैं और फिर आज़ाद खयाली जीतने अच्छा लगने लगता है।

---

*जोरा भाई पटेल, श्री एस एस पी आर्ट्स कॉलेज सिमलिया

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

मनुष्य जिन स्थितियो मे जी रहा होता है उससे वह असंतुष्ट रहता हैं। अक्सर प्रेम स्त्री केन्द्रित बन गया है और वो मनीषा में केन्द्रित हैं। इस उपन्यास मे चित्रित किया हे।

सविता :

सविता 'वशज' उपन्यास का प्रमुख नारी पत्र है। वह व्यापारी शर्मा की पढ़ी लिखी बेटी और जजसाहब के बेटे सुधीर की पत्नी हे। सविता में खानदानी वह होने के सारे लक्षण थे,सबका मन मोह लेने की काला में वह निपुण थी धीरे-धीरे घर के कड़े कानून सीख कर वह अपने आप को जजसाहब के मुताबिक ढाल रही थी। सविता कमजोर औरत नहीं थी। शादी की अगली सुबह से उसने शादी की तलाश शुरू कर दी, जो उसके समृद्ध अटतालिका को धाम सके। पर जल्दबाज़ी करना उसके स्वभाव मैं नहीं था प्रतिदूंदीयो को बोलकर अपनि ताकत और दूसरे की कमजोरी का जायजा लेकर काम करने से बड़ी से टकराहट मे भी सफलता हाथ रहती हैं,वह जानती थी "सविता व्यापारी की बेटी थी, घाटे का सौदा वह कभी नहीं करती। व्यापारी सिर्फ लेना जानता हैं, देना नहीं। उसमे भी यह प्रकृत फुट-फुटकर भरी थी। आज की दुनियादारी, व्यावहारिकता उसे खूब आती थी। वास्तव में सविता उस मूल्य तं का मोहरा है जो संबंधो से बठकर भौतिक चीजो को महत्व देता हैं। अपने सुख की तलाश व्यक्ति मैं नहीं इन्ही चीज़ों में करता हैं। सविता ने विवाह सुधीर से नहीं किया था बल्कि सुधीर के खानदानी ठाठ-बाट से किया था। वह इतनी व्यावहारिक और दुनियादारी हे की प्रणय के उत्तपत क्षणोमें भी इस दुनियादारी को भूलती नहीं है।

इस उपन्यास में सविता व्यक्ति चरित्र के साथ वर्ग चरित्र भी हो सकती है। समाज में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहा पर पेसे ले लिए मानवीय संबंधों की बाली दी जाती है। सविता उनही मे से एक है।

मनु :

मनु 'चितकोबरा' उपन्यास का प्रमुख नारी चरित्र हैं। वह महेश गोयल नामक उद्धोगपति की पत्नी और दो बच्चो की माँ है। मनु एक सजग औरत हैं और अपने प्रति सचेत भी।यंत्रवत जिंदगी वह नहीं जी सकती। जिस जिंदगी में शुष्कता हो, किसी प्रकार की समरसता नहीं एसी जिंदगी से वह कभी कभी घभरा जाती थी। महेश मनु को प्यार नहीं करता। महेश के लिए विवाह अक तयशुदा, निश्चित प्रक्रियाभर हैं। तब उसके मन को सदेह को अंधेरा घेर लेता हैं। "क्या महेश मुजसे प्यार करता है? वैसे जैसे मैं करती हूँ। अच्छा न सही वैसे जैसे में करती हूँ करता तो हो? क्या बिलकुल करता ही नहीं ?" वैवाहिक जीवन जब जड़ बन जाता हैं तो मन की बात मन में ही रहती हैं घुटन बढ़ते हैं। भीतर ही भीतर

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

लावा उबलता हैं तो विशफोट होना लाज़मी है,यह प्रकृति का नियम हैं। मनु रिचर्ड से भी संबंध स्थापित करती। मृदुला गर्ग की अधिकतर नरिया वैवाहिक बंधन का महत्व नहीं देती थी। साथ ही साथ अन्य पुरुषो से संबंध रखते समय हिचकिचाती भी नहीं है। वह पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क समाज में दँढ़ीत होना आदि दर से वह बाहर निकलती हे। समाज का चेहरा उसने पढ़ लिया है। 'चित कोबरा' की मनु भी महेश के होते हुए रिचर्ड से संबंध स्थापित करती है। यह करते समय उसे कन में कोई अपराध बोध नहीं है।

यहा मनु एक एस चरित्र हें जिसमे पुरुष की बराबरी करती हुई नारी की देहगाथा भी है और मन:गाथा भी।

काजल :

काजल बनर्जी 'अनित्य' उपन्यास में अक प्रखर क्रांतिकारी के रूप में उभर केर आई है। वह भगतसिंह के विचारो से प्रेरित होकर इस मार्ग पर चलने वाली स्त्री पात्र हें। काजल सिर्फ अपने मागर्ग पर चलती नहीं बल्कि अपने साथ औरों को भी लेकर चल रही हें। उसके अपने निश्चित विचार हैं, परिणामो के वह परिचित हैं, फिर भी अपने को जोखिम मे डालकर भी वह उस लक्ष्य को हासिल करना चाहती है।

काजल का चरित्र एक अलग स्त्री के रूप में चित्रित हुआ है। आज़ादी के पहले स्वातंत्रता आंदोलन में स्त्रियो की अहम भूमिका रही है। आज़ादीके बाद भी समानता की लड़ाई में भी नारी अपना योगदान दे वह लेखिका को अपेक्षित है। नारी की दुनिया सिर्फ अपना घर-परिवार, नौकरी, बच्चे या सिर्फ प्रेम तक सीमित नहीं हैं। सामाजिक परिवर्तन मे भी उसके योगदान की आवश्यकता है। 'अनित्य' की काजल और अन्य नारी इसी रूप में चित्रित हें। काजल सशक्त क्रांति के मार्ग से आम जनता केआर अधिकारियों की लड़ाई लड़ने वाली नशरी है। "क्रांति से हमारा अभिप्राय समाज की वर्तमान प्रणाली और वर्तमान संगठन को पूरी तरह उखाड़ फेकना हें। इस उदेश्य से हम सरकार की ताकत को अपने हाथो लेना चाहते है।" वह सत्ता और पेसा दोनों पर आम जनता का अधिकार स्थापित करना चाहती है।अत्याचारियों, भ्रष्ट, रिश्वत्खोरो के दमन और क्रूर व्यवस्था के प्रति उसका क्रोध देखने मिलता है। एक शशक्त नारी के रूप में काजल उभरकर आई हें।

माधवी :

"में और में" उपन्यास की नायिका माधवी उधयोगपति राकेश ki पत्नी एव प्रतिभाशाली लेखिका हें। उनका संबंध उच्च वर्गीय परिवार के साथ है। अपने परिवेश के प्रति वह काफी संवेदनशील दिखाय देती हें। परंतु सुविधाओ को छोड़ने की इच्छा न होने केन

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

कारण उसमे जो दया का भाव है। वह झूठा है। माधवी वास्तव में जेसी है उस रूप में वो अपने को औरों के सामने प्रस्तुत नहीं करती उसका ब्राह्य रूप धोका हें। वह केउशल की लेखकीय प्रतिभा से प्रभावित होकर भी उसकी गरीबी से नफरत करती हें। न चाहते हुए भी आकर्षित हो जाती है। वह खुदगर्ज है। अपने स्वार्थ की प्रति के लिए मानवीय संबंधो का इस्तेमाल करने से भी नहीं चुकती। "अपने स्वार्थ के लिए जीते जागते इंसान को वस्तु की तरह इस्तेमाल करना बुरा नहीं हें? तो जब उसके भीतर के न्यायाधीश ने पूछा अपनी कलात्मक प्रगति के लिए व्यक्ति का उपयोग अन्यायनहीं तो क्या हें? उसके कंधे झटककर कहा, मानवीय संबंधो में कुछ न कुछ अन्याय तो होता ही हें।" माधवी सिर्फ अपने मानसिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए कौशल की और आकृश्त होती हैं। वह न कौशल से प्रेम से करती है और न ही उसके प्रति न्याय। वह तो कौशल का इस्तेमाल करती है।

माधवी में न्याय बुद्धि के रहते उसमे सुविधजीवी होने के लिए अपराध बोध तो हें पर सुविधाओको का्त्यागकर जीने का साहस नहीं हें और लेखक होने का अहम भी उसमे हें। जो अन्य विचारहीन महिलाओ से उसे अलग करता है।

कठगुलाब की नारियाँ :

'कठगुलाब' मृदुला गर्ग का नारी नप्रधान उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास ने लगभग चौदह स्त्री पात्र हें। जिसमे स्मिता, मरियन, नर्मदा, असीमा, दरजिनबीबी। और नीरजा प्रमुख पात्र हैं। विभिन्न नारी पात्रो के माध्यम से लेखिका नारी के कर्म, धर्म, और मर्म, निरूपण करती हुई 'पुरुष सत्ता के समानान्तर स्त्री सत्ता' निर्मित करने के लिए स्त्री पात्रो को संधर्ष और जहोजहद करती हुई दिखाती हें। कभी स्त्री स्वतन्त्रता की पक्षधर बनकर 'सर्वभोमिक भगिनीवाद' के आदर्श से प्रभावित होकर गोधड़ परियोजना जेसी संकल्पनाए सामने लाती हें। काही उनके नारी पात्र पुरुषो से संधर्ष करते - करते सफल होने दिखे पड़ते हें, तो कभी विफल। परिणाम चाहे कुछ भी निकले 'कठगुलाब' की नारी पात्र प्रतिशोध और मुद्रा के लिए हुए हें। इन नारी पात्रो ने रणचंडी दुर्गा का रूप धरण किया हैं। अत चंद्रकांता की दृष्टि में- मृदुला गर्ग के कठगुलाब की देश विदेश मे बसी नारियो जो भिन्न संदर्भो स्थितियो बावजूद पुरुष की सन्मतिह मानसिकता के विरोध में अड़ी-डटी हें। बार-बार तोड़ जाने पर भी हर न माननेवाली स्त्रीया मौजूद हें।

इस उपन्यास के पात्रो मे आदि से अंत तक कटु यथार्थ का चित्रण हें। इसमे अक साथ मनुष्य जीवन की संतरिकता, अनवरत शोषित और विद्रोह की मुद्रा में खड़ी मारियो का चित्रण फेमिनिष्ट नजरिए से हुआ हें।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

कुल मिलकर मृदुला गर्ग अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी की संस्कृतिक और सामाजिक छवि के तिलस्म को तोड़ नयी चेतना को जन्म देना चाहती हैं। इसलिए उनके उपन्यासों मे चित्रित नरिया अपने सोच विचार, अपना चिंतन, अपनी प्रतिभा, अपनी संवेदनशीलता के कारण पाठको पर अमित छाप छोड़ती हैं। उनके उपन्यासों के चरित्र लोक से हटकर नया मार्ग ढूंढ रहे हैं, इस मार्ग पर चलने का प्रयास उनमे है।

संदर्भ :

1 चूकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग, पृष्ठ- ७७
2 वंशज, मृदुला गर्ग, पृष्ठ- ७६
3 चित्तकोबरा, मृदुला गर्ग पृष्ठ- ८६
4 अनित्य, मृदुला गर्ग, पृष्ठ-८७
5 में और में, मृदुला गर्ग, पृष्ठ- ६३
6 संचेतना- सितंबर १६६६- परिचर्चा 'हिन्दी मानस और नारी लेखन' में 'लेखिकाए अपनी रचनात्मक ऊर्जा बनाए रखे - चंद्रकांता की टिप्पणी से पृष्ठ १५